इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 21.01.2019 को औरंगाबाद में सम्पन्न हुई बैठक का कार्यवृत्त।

माननीय इस्पात राज्य मंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की चौथी बैठक दिनांक 21.01.2019 को औरंगाबाद में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची **'अनुबंध'** के रूप में संलग्न है।

2. **सचिव (इस्पात) अपने वक्तव्य में कहा कि मंत्रालय और इसके उपक्रमों में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) का पूर्णत: अनुपालन किया जा रहा है।** इसके अंतर्गत सभी प्रकार की अधिसूचनाएँ, सामान्य आदेश आदि द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं और संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले सभी कागज़ात भी नियमानुसार द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं। उन्होंने मंत्रालय के कुछ उपक्रमों द्वारा **त्रिभाषी शब्दकोष** के निर्माण की प्रशंसा की और उसे एक मौलिक कार्य बताया। अंत में उन्होंने कहा कि बैठक में **माननीय सदस्यों द्वारा जो सुझाव दिए जाएंगे, उन्हें मंत्रालय और इसके उपक्रमों द्वारा पूर्णत: लागू करने का भरसक प्रयास किया जाएगा जिससे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में और अधिक प्रगति होगी।**

3. **श्री विष्णु देव साय (माननीय इस्पात राज्य मंत्री)** ने सर्वप्रथम बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत और अभिनंदन करते हुए अपनी खुशी जाहिर की और सभी को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की शुभकामनाएँ दीं। **उन्होंने मंत्रालय व उपक्रमों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए हिन्दी सलाहकार समिति के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की।** उन्होंने कहा कि मंत्रालय अपने नियंत्रणाधीन उपक्रमों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का भरपूर प्रयास कर रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम भी आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि **एनएमडीसी, आरआईएनएल** और **एमएसटीसी** जैसे उपक्रम 'ग' क्षेत्र में होकर भी राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं, यह सराहनीय है। उन्होंने **सेल** और **मेकॉन** द्वारा कई शहरों में **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)** की अध्यक्षता करने के लिए उनके विशेष योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने **आरआईएनएल** की पत्रिका **"सुगंध"** का भी उल्लेख किया जिसे **माननीय राष्ट्रपति द्वारा कई बार पुरस्कृत किया गया है।** उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा भी हमारे कई उपक्रमों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर कई बार सम्मानित किया है। मंत्रालय ने उपक्रमों में हिन्दी में कामकाज को प्रोत्साहन देने के लिए **हिन्दी योजना के अंतर्गत** हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले उपक्रमों के अधिकारियों/कार्मिकों को **"इस्पात राजभाषा सम्मान"** दिए जाने का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि संयुक्त सचिव (एस) की अध्यक्षता में मंत्रालय की **राजभाषा कार्यान्वयन समिति** की बैठकें नियमित रूप से की जा रही हैं। मंत्रालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2018 से 28 सितम्बर, 2018 तक **हिन्दी पखवाड़े** का आयोजन किया गया। इसी क्रम में, हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अन्य कार्यक्रमों के आयोजनों का तथा **तकनीकी शब्दावली** के निर्माण का भी उन्होंने उल्लेख किया।

4. वस्तुत: माननीय मंत्री महोदय ने विगत 4 वर्षों में इस्पात मंत्रालय द्वारा लिए गए निर्णयों की चर्चा की जिनके माध्यम से यह बताया गया कि हमारे उपक्रमों में अनेक हिन्दी कार्यक्रमों जैसे- **हिन्दी संगोष्ठी, हिन्दी कार्यशाला, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी नाटक मंच, हिन्दी विद्वानों की जन्म शताब्दी मनाना आदि** के माध्यम से हिन्दी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाई है। उन्होंने हिन्दी सलाहकार समिति के **माननीय सदस्य श्री प्रभात वर्मा द्वारा** बनाई गई लघु फिल्म **"हिन्दी की शान"** के लिए उनकी प्रशंसा की और कहा कि यह मंत्रालय द्वारा किया गया एक नवीन प्रयोग था। माननीय मंत्री महोदय ने अपने सम्बोधन के अंत में राजभाषा हिन्दी के विकास हेतु सबसे महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक बात यह कही कि- **"नीति, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा ही राजभाषा हिन्दी का विकास किया जा सकता है"।**

5. इसके पश्चात् **संयुक्त सचिव (एस)** ने मंत्रालय द्वारा हिन्दी में की गई प्रगति का ब्यौरा पीपीटी के माध्यम से **डिजिटल बोर्ड** पर सभी को दिखाया तथा उस पर सभी का ध्यान आकृष्ट किया।

उन्होंने पूर्व में आयोजित बैठकों का संक्षिप्त विवरण देते हुए सदस्यों को बताया कि मंत्रालय की पुनर्गठित हिन्दी सलाहकार समिति की अब तक 3 बैठकें हो चुकी हैं जिसमें दिल्ली में 2 व इंदौर में 1 बैठक आयोजित की गई थी तथा यह चौथी बैठक औरंगाबाद में आयोजित की गई है। पूर्व में की गई तीनों बैठकों में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई भी की गई। उपक्रमों के 158 कार्यालयों में से लगभग 98 कार्यालयों को अधिसूचित किया जा चुका है तथा **प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक में जो निर्णय लिए गए थे, उन सभी मुद्दों पर उपक्रमों से अनुवर्ती कार्रवाई के लिए कहा था जिस पर उपक्रमों ने सकारात्मक रूप से कार्य किया है। पिछली बैठक में मंत्रालय की ओर से विभिन्न उपक्रमों के 18 कार्मिकों को हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए माननीय इस्पात मंत्री महोदय के द्वारा सम्मानित भी किया गया, जो एक अनूठी पहल थी।**

6. तत्पश्चात् समिति के माननीय सदस्य श्री प्रभात वर्मा द्वारा निर्मित 10 मिनट की लघु फिल्म **"हिन्दी की शान"** का विमोचन किया गया और उसे इलेक्ट्रोनिक डिजिटल बोर्ड पर दिखाया गया। इसके साथ-साथ विगत 4 वर्षों में मंत्रालय द्वारा हिन्दी के क्षेत्र में की गई प्रगति पर भी एक लघु फिल्म दिखाई गई जिसे सभी सदस्यों ने सराहा। तत्पश्चात् सीडैक, पुणे के 2 अधिकारियों ने हिन्दी सॉफ्टवेयर **"कंठस्थ"** के बारे में बहुत ही सरल तरीके से सदस्यों को बताया कि वह कैसे कार्य करता है और उसका प्रशिक्षण कार्मिकों को कैसे दिया जा सकता है। आधुनिक तकनीक से किस तरह हिन्दी को परिष्कृत किया जा सकता है- इस पर भी एक लघु फिल्म दिखाई गई। इसके साथ-साथ औरंगाबाद के स्थानीय विश्वविद्यालय के 3 हिन्दी प्रोफेसरों को माननीय मंत्री महोदय द्वारा पुस्तकें और शॉल देकर सम्मानित किया गया और **सेल** की पत्रिका **"इस्पात भारती"** व **एफएसएनएल** की पत्रिका **"दर्पण"** का भी माननीय मंत्री महोदय के कर-कमलों द्वारा विमोचन किया गया। पूर्णत: डिजिटल माध्यम से सभी उपक्रमों द्वारा अपनी 4 वर्षों की उपलब्धियों व हिन्दी के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों को पीपीटी के माध्यम से उनके प्रमुखों ने पढ़कर और डिजिटल बोर्ड पर दिखाकर सदस्यों को समझाया और बताया। यह एक नवीन प्रयोग था।

7. **डॉ. विकास दवे (माननीय सदस्य)** ने कहा कि 2016 से हम लोग साथ मिलकर हिन्दी की समीक्षा में लगे हुए हैं। उन्होंने आयोजित की गई हिन्दी कार्यशालाओं की संख्या को संतोषजनक बताया। उन्होंने कहा उपक्रमों से भेजे गए अंग्रेजी पत्र शून्य हैं- यह स्थिति बहुत श्रेष्ठ है। **उन्होंने उदाहरणस्वरूप कहा कि- "प्रगति पिरामिड की तरह होती है, हमें इसी स्थिति पर टिके रहना चाहिए"। उन्होंने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक परम्परानुसार सभी सदस्यों का स्वागत किए जाने के लिए विशेषतौर पर सभी को धन्यवाद दिया।** उन्होंने कहा कि हिन्दी की प्रगति के संबंध में तीन वर्षों के आंकड़े दिए जाने चाहिए ताकि तुलनात्मक अध्ययन हो सके। उन्होंने इस बात पर भी प्रसन्नता व्यक्त की कि आज तक जो भी सुझाव उनके द्वारा दिए गए, मंत्रालय उनका पालन कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि सभी उपक्रम अपनी वेबसाइट को अपडेट करें और हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन जब से हुआ है तब से लेकर आज तक जितने भी सुझाव समिति द्वारा दिए गए हैं, उनका आकलन करें व सभी सदस्यों के विचारों की एक पुस्तिका बनती है तो वह बहुत उपयोगी रहेगी।

8. **श्री त्रिभुवन नाथ शुक्ल (माननीय सदस्य)** ने अपने सम्बोधन में कहा कि विगत 4 वर्षों में मंत्रालय व उपक्रमों के हिन्दी के कार्यों में निरंतर वृद्धि हुई है। **उन्होने "सुगंध" पत्रिका के प्रकाशन के लिए आरआईएनएल को बधाई भी दी।** सभी उपक्रमों में हिन्दी के रिक्त पदों को भरे जाने पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रस्तुति में **विशिष्ठ की जगह विशिष्ट** लिखें, **रूपये** की जगह **रुपए** का प्रयोग करें और

अभिनन्दन की जगह **अभिनंदन** लिखें। उन्होंने सुझाव दिया कि **प्रयागराज में कुंभ आयोजन के समय** एक हिन्दी संगोष्ठी होनी चाहिए जिससे पूरे विश्व में हिन्दी का संदेश पहुंचे।

9. **श्री श्रीराम परिहार (माननीय सदस्य)** ने कहा कि हिन्दी भाषा बहुत महत्वपूर्ण भाषा है, हिन्दी सलाहकार समिति की उपयोगिता हमेशा बनी रहेगी, हिन्दी के विकास की दिशा कभी गड़बड़ नहीं होनी चाहिए। हमें भाषा संबंधी सतर्कता बरतनी चाहिए। उपक्रमों के माध्यम से भारत का विकास किया जाना है। उन्होंने कहा कि सेल का, एफएसएनएल या किसी अन्य उपक्रम का नाम अंग्रेजी में हो कोई बात नहीं लेकिन इनका नाम कोष्ठक में **हिन्दी में** अवश्य लिखा जा सकता है। **एफएसएनएल** की पत्रिका **"दर्पण"** के संदर्भ में उन्होंने कहा कि उसमें केवल भिलाई के रचनाकार हैं, उन्हें पूरे देश से रचनाएँ व राष्ट्रीय स्तर के लेख आमंत्रित करने चाहिएं। उन्होंने मंत्रालय व उपक्रमों के अधिकारियों/कार्मिकों की व्यवहार कुशलता की सराहना की। अंत में उन्होंने कहा कि- **"देश के विकास की नींव भाषा ही हो सकती है"।**

10. **श्रीमती क्रांति कनाटे (माननीय सदस्य)** ने कहा कि हिन्दी की प्रगति के संबंध में तीन वर्षों के आंकड़े दिए जाने चाहिएं ताकि उसका तुलनात्मक अध्ययन हो सके। हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अहिन्दी क्षेत्रों में समिति की बैठकें आयोजित की जानी चाहिएं। उन्होंने विभिन्न उपक्रमों की पत्रिकाएँ भिजवाने के लिए मंत्रालय/उपक्रमों को धन्यवाद दिया। उन्होंने दिनांक 18 अगस्त, 2018 को मॉरीशस में आयोजित हुए 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में मंत्रालय के योगदान की विशेष रूप से सराहना की। उन्होंने सुझाव दिया कि कई उपक्रमों के लैटर हैड पर लिखा होता है कि हिन्दी का पत्र उपेक्षित नहीं है, पत्र का उत्तर शीघ्र दिया जाएगा, उसे परिवर्तित करके लिखा जाना चाहिए कि- **हिन्दी में पत्र अपेक्षित है या हिन्दी में पत्र का स्वागत है तथा प्रत्युत्तर शीघ्र दिया जाएगा।** उन्होंने कहा कि हिन्दी को जमीन से जोड़ना है तो बोलचाल की भाषा का और हिन्दी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जैसे **मार्केटिंग** के स्थान पर **विपणन** शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

11. **श्री पुनीत प्रधान (माननीय सदस्य)** ने कहा कि माननीय मंत्री महोदय से हम सभी प्रेम करते हैं, हमें उनका सहयोग मिलता रहता है, वे अच्छे मंत्री ही नहीं, अच्छे व्यक्ति भी हैं। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी की प्रगति के संबंध में सहयोगपूर्ण कार्य करने के लिए माननीय केन्द्रीय इस्पात इस्पात मंत्री जी का, राहुल भगत जी का, उमेश अग्रवाल जी का, श्याम यादव जी का और अजीत झा जी का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने **श्री प्रभात वर्मा द्वारा** बनाई गई लघु फिल्म **"हिन्दी की शान"** की प्रशंसा की और सुझाव दिया कि कुछ आवश्यक संशोधनों के साथ इसे अपनी आने वाली पीढ़ी की जानकारी के लिए सभी विश्वविद्यालयों को भेजा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसमें वो पूर्ण सहयोग करेंगे।

12. **डॉ. बंडोपंत पाटिल (माननीय सदस्य)** ने कहा कि मैंने इंदौर बैठक में तीन सुझाव दिए थे जिनमें से एक था कि अहिन्दी क्षेत्रों में समिति की बैठकें की जाएं- इस सुझाव को दृष्टिगत रखा जाए। समिति के अगले कार्यकाल में 3 वर्षों में 6 बैठकें की जानी चाहिएं। उन्होंने 2016 से अब तक समिति की 4 बैठकें आयोजित करने के लिए मंत्रालय की प्रशंसा की है।

13. **श्री गोपाल कृष्ण फरलिया (माननीय सदस्य)** ने सर्वप्रथम बैठक की उचित व्यवस्था के लिए सभी संबंधितों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि देश को आजाद हुए 70 वर्ष हो गए हैं लेकिन अभी भी बहुत लोगों की हिन्दी के प्रति मानसिकता नहीं बदली है, उसे बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में अंग्रेजी उद्घोषणा की जगह हिन्दी में उद्घोषणा होने चाहिए। उत्पादों की सूची हिन्दी में बनवाई जाए, उनकी गुणवत्ता का वर्णन हिन्दी में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि त्रिभाषी शब्दकोष उन्हें डाक द्वारा भिजवाया जाना चाहिए।

14. **श्री देशपाल सिंह राठौर (माननीय सदस्य)** ने पूर्व बैठक में उनके द्वारा दिए गए सुझाव मानने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी के विकास की गति निरंतर बढ़ रही है। उन्होंने आरआईएनएल और एनएमडीसी द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में उन्हें आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि **मेघदूत इंडिया** पुस्तक को द्विभाषी किया जा सकता है। उन्होंने दिखाई गई दोनों सीडी को अद्यतन करने, दोनों मंत्रियों का हिन्दी भाषण उसमें सम्मिलित करने पर जोर दिया।

15. **श्री गोपाल पहाड़िया (माननीय सदस्य)** ने कहा कि इस बैठक में नई चीजें देखने को मिली हैं। उन्होंने डॉ अम्बेडकर विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के तीन प्रोफेसरों को हिन्दी में कार्य करने के लिए सम्मानित किए जाने को अच्छी पहल बताया। उन्होंने समिति की बैठकों में आमंत्रित सदस्य को केवल एक बार ही बुलाए जाने की मंत्रालय की व्यवस्था को अनुचित बताया। उन्होंने बैठक की व्यवस्था पर और ध्यान देने का सुझाव भी दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें जिस प्रकार खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय में अधिकारिक रूप से हिन्दी बैठकों में बुलाया जाता है, उसी प्रकार इस्पात मंत्रालय में भी बुलाया जाए।

16. **श्री आनन्द कुमार, संयुक्त निदेशक (राजभाषा)** ने बैठक में उपस्थित सभी को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि बैठक के सफल आयोजन हेतु उन्होंने अपनी ओर से हर संभव प्रयत्न किए लेकिन फिर भी यदि कोई खामी रह गई हो तो उसके लिए उन्हें खेद है। तत्पश्चात् उन्होंने बैठक के समापन की घोषणा की।

*****

अनुबंध

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 21.01.2019 को औरंगाबाद में हुई बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची

	सर्वश्री/सुश्री	
1.	विष्णु देव साय, इस्पात राज्य मंत्री	अध्यक्ष
2.	क्रांति कनाटे	सदस्य
3.	डॉ. श्रीराम परिहार	सदस्य
4.	डॉ. बंडोपंत पाटील	सदस्य
5.	प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	सदस्य
6.	डॉ. विकास दवे	सदस्य
7.	गोपाल कृष्ण फरलिया	सदस्य
8.	चन्द्रकांत जोशी	सदस्य
9.	पुनीत प्रधान	सदस्य
10.	देशपाल सिंह राठौर	विशेष आमंत्रित
11.	गोपाल सिंह पहाडिया	विशेष आमंत्रित

इस्पात मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग के अधिकारीगण

	सर्वश्री/सुश्री	
12.	श्री विनय कुमार, सचिव (इस्पात)	सदस्य
13.	टी. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव	सदस्य-सचिव
14.	आनन्द कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित
15.	आस्था जैन, सहा-निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के अध्यक्ष/अधिकारीगण

सर्वश्री/सुश्री		
1.	पी के रथ, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. विशाखापट्टनम	सदस्य
2.	एम.पी. चौधरी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मॉयल लिमिटेड, नागपुर	सदस्य
3.	बी.बी. सिंह, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, एमएसटीसी लिमिटेड, कोलकाता	सदस्य
4.	अतुल भट्ट, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मेकॉन लिमिटेड, रॉची	सदस्य
5.	एम वी सुब्बा राव, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड, बेंगलूरू	सदस्य
6.	राजीव भट्टाचार्य, प्रबंध निदेशक, एफ.एस.एन.एल. लिमिटेड, भिलाई	सदस्य
7.	अतुल श्रीवास्तव, निदेशक (कार्मिक), स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	प्रतिनिधि
8.	संदीप तुला, निदेशक, एन.एम.डी.सी. लिमिटेड, हैदराबाद	प्रतिनिधि
9.	एम.पी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, एम.एस.टी सी. लिमिटेड	उपस्थित
10.	ललन कुमार, उप-महाप्रबंधक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि	उपस्थित
11.	रूद्रनाथ मिश्र, उप-महाप्रबंधक, एनएमडीसी लिमिटेड	उपस्थित
12.	हीराबल्लभ शर्मा, सहा. महाप्रबंधक, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	उपस्थित
13.	छगन लाल नागवंशी, राजभाषा अधिकारी, एफ.एस.एन.एल. लिमिटेड	उपस्थित
14.	एस राजेंद्र, महाप्रबंधक, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड	उपस्थित
15.	आर के सिंहा, महाप्रबंधक, मेकॉन लिमिटेड, रॉची	उपस्थित
16.	टी. दास, व.उप-महाप्रबंधक (राजभाषा), मॉयल लिमिटेड	उपस्थित
17.	पूजा वर्मा, व. प्रबंधक (कार्मिक एवं राजभाषा अधिकारी)	उपस्थित